

संपादकीय संकट में राहत

कोरोना संकट के बीच भारतीय अर्थव्यवस्था को गति देने व राज्यों की वित्तीय क्षमताओं को बढ़ाने के मकसद से शु. वार को केंद्रीय बैंक आगे आया। पहले से ही मंदी जैसे हालात से गुजर रहे देश को कोरोना संकट ने बड़ी चोट दी है। लॉकडाउन के चलते छोटे-बड़े तमाम तरह के धंधे बंद हैं। अनुमान है कि हर दिन पैंतीस हजार करोड़ का नुकसान हो रहा है और लॉकडाउन के पहले ही चरण में देश की जीडीपी को करीब आठ लाख करोड़ का नुकसान हो चुका है। शु. वार को रिजर्व बैंक ने लॉकडाउन के अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले प्रभाव को कम करने के मकसद से एक लाख करोड़ रुपये के बूस्टर पैकेज का ऐलान किया। साथ ही बैंकों की वित्तीय तरलता को बढ़ाने के मकसद से रिजर्व रेपो दर में पच्चीस बेसिस प्वाइंट की कमी की, जिसका मकसद है कि लोगों को ऋण लेने में आसानी होगी। इससे पहले तीन सप्ताह पूर्व केंद्रीय बैंक ने रेपो रेट में 0.75 प्रतिशत की कटौती की थी और एएमआई चुकाने के लिए तीन माह की छूट दी थी। इस घोषणा में केंद्रीय बैंक ने टारगेटेड लॉन्ग टर्म रिफाइनिंग ऑपरेशंस के लिए पचास हजार करोड़ रुपये का प्रावधान किया। निःसंदेह इससे बैंकों की कर्ज देने की क्षमताओं का विस्तार होगा। इससे बैंक को कुछ सालों के लिए रेपो दर पर कर्ज मुहैया हो जाता है। इसके साथ ही ग्रामीण विकास को गति देने के लिए पच्चीस हजार करोड़ रुपया नाबार्ड को दिया जायेगा, जिससे बैंक खेती व ग्रामीण क्षेत्र के लिए अपनी ऋण क्षमता का विस्तार कर सकेगा। इसी तरह स्मॉल इंडस्ट्रीज डेवलपमेंट बैंक यानी सिडबी को पंद्रह हजार करोड़ की सहायता दी जायेगी। यह संस्था सूक्ष्म, छोटे व मध्यम दर्जे के उद्योगों को आर्थिक सहायता उपलब्ध कराती है। साथ ही हाउसिंग प्रोजेक्ट्स को गति देने के लिए नेशनल हाउसिंग बैंक को दस हजार करोड़ की सहायता दी जायेगी। देश के केंद्रीय बैंक ने लॉकडाउन के चलते उपभूत वित्तियों से भी बैंकों को राहत देने का प्रयास किया। इसी कड़ी में मार्च के अंतिम सप्ताह में लोन की किस्तें चुकाने के लिए केंद्रीय बैंक ने उपभूत 131 को जो तीन माह की मोहलत दी थी, उसे नॉन परफॉर्मिंग एस्टेट्स की परिधि से बाहर रखा गया है। दरअसल, बैंक ऋण वापसी में नब्बे दिन के विलंब पर ऐसे खातों को एनपीए घोषित कर देते हैं। निःसंदेह इन घोषणाओं के जरिये आरबीआई गवर्नर शक्ति कांत दास ने आईएमएफ व अन्य अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं द्वारा विश्व के अन्य देशों समेत भारतीय जीडीपी के अवमूल्यन की घोषणाओं के बीच भारतीय अर्थव्यवस्था में भरोसा कायम करने का प्रयास किया। उन्होंने स्वीकारा कि हम संकट के दौर से जरूर गुजर रहे हैं, मगर फिर हमारी अर्थव्यवस्था तेजी से रफ्तार पकड़ेंगी। उन्होंने कहा कि गिरावट के बावजूद भारतीय अर्थव्यवस्था की जीडीपी दर जी-20 देशों में अधिक रहेगी। निःसंदेह केंद्रीय बैंक के इन मौद्रिक उपायों से अर्थव्यवस्था की तरलता बढ़ेगी तो उपभूत 131 को भी लाभ होगा। इससे नये ऋण लेने वाले उपभूत 131 को कम ब्याज दर पर ऋण मिल सकेगा। लेकिन दूसरी ओर बैंकों पर ब्याज दरों में कमी के दबाव के बीच सावधि जमा करने वालों को नुकसान भी उठाना पड़ सकता है। वहीं दूसरी ओर बैंक ज्यादा लोन दे सकते हैं, जिसके लिये वे अपने लाभांश में कमी भी कर सकते हैं। वहीं दूसरी केंद्रीय बैंक के प्रयासों से कोरोना संकट के दौर में बैंकों, माइ. ए फाइनेंस इंस्टीट्यूट व गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों को राहत मिलेगी जो अब तक वित्तीय तरलता के संकट से जूझ रही थीं। केंद्रीय बैंक ने इन्हें एक लाख करोड़ की नकदी पहुंचाने की व्यवस्था की है। वहीं बैंक का विश्वास है कि वित्तीय वर्ष की दूसरी छमाही में आपूर्ति के व्यवधानों से मुद्दरफ्रीति में भी गिरावट आ सकती है। वहीं कोरोना संकट से जूझ रहे राज्यों के खर्च संकट को दूर करने के लिए राज्यों की अग्रिम की सुविधा को तीस से बढ़ाकर साठ प्रतिशत कर दिया है।

अमेरिका में महामंदी के बाद बेरोजगारी की दर सबसे अधिक हुई

न्यूयार्क, (आरएनएस)। अमेरिका में गुरुवार को जारी आंकड़ों के मुताबिक बेरोजगारी की दर 1930 की महामंदी के बाद सबसे अधिक हो गई है और कोरोना वायरस महामारी के चलते प्रत्येक छह में एक अमेरिकी श्रमिक को नौकरी से निकाल दिया गया है। गहराते आर्थिक संकट का मुकाबला करने के लिए अमेरिकी संसद ने लगभग 500 अरब अमेरिकी डॉलर के पैकेज को मंजूरी दी है। सरकार ने बताया कि पिछले सप्ताह 44 लाख से अधिक लोगों ने बेरोजगारी लाभ के लिए

आवेदन किया। इसके साथ ही पिछले पांच सप्ताह में करीब 2.6 करोड़ लोग बेरोजगारी लाभ के लिए आवेदन कर चुके हैं। अमेरिका के लिए मुश्किल खबर यह भी है कि ऐसे सबूत सामने आए हैं कि न्यूयॉर्क राज्य में शायद 27 लाख लोग संक्रमित हैं, जो परीक्षणों द्वारा पुष्टि की गई संख्या का 10 गुना है। स्वास्थ्य आयुक्त ऑक्सिफेरिस बारबोट ने कहा कि सिर्फ न्यूयॉर्क शहर में 86 लाख की आबादी में 10 लाख से अधिक लोग संक्रमित हो सकते हैं। अमेरिका में लॉकडाउन के आर्थिक परिणाम



विश्वविद्यालय के आंकड़ों के मुताबिक कोरोना वायरस से दुनिया भर में 1.90 लाख लोगों की मौत हो चुकी है, जिसमें एक लाख से अधिक मौत यूरोप में हुईं, जबकि अमेरिका में करीब 50,000 लोगों की मौत हो चुकी है।

मैनचेस्टर सिटी के लिए एग्यूरो सबसे बड़े आदर्श : गेब्रियल जीसस

रियो डी जनेरियो,। इंग्लिश फुटबाल क्लब मैनचेस्टर सिटी के खिलाड़ी गेब्रियल जीसस ने क्लब की मुख्य टीम में जगह पाने के लिए सर्जियो एग्यूरो के साथ अपने मुकाबले को बेकार के रूप में याद किया और उन्होंने लीग के इतिहास में उन्हें क्लब का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी बताया। समाचार एजेंसी सिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, मैनचेस्टर सिटी के लिए 138 मैचों में 63 गोल करने के बावजूद 23 वर्षीय जीसस, कोच पेप गार्डियोला की टीम सिटी की अंतिम 11 में नियमित रूप से जगह पाने के लिए संघर्ष करते रहे हैं। इसमें एग्यूरो को ज्यादातर नौवें नंबर के रूप में देखा गया है। जीसस ने इंस्टाग्राम लाइव सेशन के



दौरान कहा, क्लब के लिए अब तक जितने भी खिलाड़ी खेले हैं, वह उनमें सबसे बड़े आदर्श हैं। मुझे पता है कि टीम में मेरा होना गारंटी नहीं है। लेकिन मेरा मानना है कि मैं सुधार कर रहा हूँ और मैं सुधार करना जारी रखूंगा। मुझे लगता है कि मेरी सबसे बड़ी कालीटी मेरी मानसिकता है। एग्यूरो ने सिटी के लिए 368 मैचों में 254 गोल किए हैं। इसमें इंजुरी टाइम में किया गया वह गोल भी शामिल है, जो उन्होंने 2012 में क्रीस पार्क रेंजर्स के खिलाफ किया था और 44 साल बाद सिटी को पहला शीर्ष खिताब जिताया था।

केरला ब्लास्टर्स ने शाटोरी से नाता तोड़ किबु विकुना को नया कोच नियुक्त किया

नई दिल्ली, (आरएनएस)। इंडियन सुपर लीग (आईएसएल) की टीम केरला ब्लास्टर्स ने बुधवार को कोच किबु विकुना को आगामी सत्र के लिए अपना मुख्य कोच नियुक्त किया। इस फुटबॉल टीम ने एल्को शाटोरी से एक सत्र के बाद ही नाता तोड़ने के फैसले के कुछ घंटों बाद यह घोषणा की। केरला ब्लास्टर्स ने टवीट करके कहा, 'हमें यह घोषणा करते

हुए खुशी हो रही है कि किबु विकुना आगामी सत्र में मुख्य कोच का पद संभालेंगे।' किबु विकुना मोहन बागान के आईलीग विजेता कोच रहे हैं। स्पेन के विकुना के रहते हुए मोहन बागान ने चार दौर पहले ही आई लीग का खिताब जीता था। कोविड-19 महामारी के कारण लीग को बीच में निलंबित करना पड़ा और बाद में मोहन बागान को चैंपियन घोषित

जर्मन फुटबॉल को मिल सकती है किक, 9 मई से शुरू हो सकते हैं बुंडेसलीगा मैच

बर्लिन, 24 अप्रैल । जर्मन फुटबॉल अधिकारी 9 मई से खाली स्टेडियमों में बुंडेसलीगा मैच कराने की योजना का आज यानी गुरुवार को ऐलान कर सकते हैं। यह कोरोना महामारी के बीच शुरू होने वाली पहली बड़ी यूरोपीय लीग होगी। जर्मनी की चॉसलर एंजेल मार्केल की सरकार धीरे-धीरे देशभर से बंदिशें हटा रही है। फुटबॉल के दीवाने जर्मनी में बुंडेसलीगा की बहाली से नए उत्साह का संचार होने की उम्मीद है। इसके मैच 13 मार्च से बंद पड़े हैं। इसके साथ ही यह यूरोप की



पहली लीग हो जाएगी जिसके मैच बहाल होंगे। जर्मनी में सार्वजनिक रूप से लोगों के इकट्ठा होने पर 31 अगस्त तक प्रतिबंध है, लेकिन ये मैच दर्शकों के बिना कराए जाएंगे। इसके 18 क्लब सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करते हुए प्रैक्टिस के लिए लौट आए हैं। लीग 30 जून तक सीजन पूरा करना चाहती है ताकि टीवी प्रसारण अधिकारों की आगुली किरत मिल सके जो 32 करोड़ डॉलर से अधिक है। उधर सियोल में साउथ कोरियाई बेसबॉल लीग ने घोषणा की है कि वह अपने सीजन की

बरखा सेनगुप्ता ने बताया मां-बच्चे रिश्ते को प्यार का सच्चा रूप,

इस दुनिया में हर पल करोड़ों लोग अलग-अलग तरह की भावनाओं का अनुभव करते हैं, लेकिन एक प्यार ऐसी भावना है, जो हमेशा एकसी रहती है। प्यार अलग-अलग संबंधों में अलग-अलग तरह का होता है। जैसे पेरेंट्स, बच्चों, भाई-बहनों, प्रेमियों और दोस्तों के बीच का प्यार और यह भावना अपने सभी रूपों में बिल्कुल सच्ची होती है। लेकिन अभिनेत्री बरखा सेनगुप्ता के लिये मां और उसके बच्चे का प्यार सबसे ऊपर है। जब वे हंगामा प्ले के ओरिजनल शो रात्रि के सेट पर बिताया गया समय याद करती हैं, तब बताती हैं कि उनके ट्रैक की इसी बात ने अपने किरदार में ढलने में उनकी मदद की थी। अपने सबसे नये प्रोजेक्ट 'रात्रि के यात्री' में रेड लाइट एरिया में काम करने वाली एक मां की भूमिका निभा रही बरखा सेनगुप्ता कहती हैं, यह मेरी अब तक की सबसे चुनौतीपूर्ण भूमिकाओं में से एक है।



अभिनेत्री बरखा सेनगुप्ता के लिये मां और उसके बच्चे का प्यार सबसे ऊपर है।

आज का राशिफल

राशि स्वामी मंगल अष्टम भाव में होने से कुछ बिगड़े काम बनेंगे। विदेश यात्रा का प्रसंग प्रबल होगा। राशि का स्वामी शुक्र दशम भाव में धन, सांसारिक सुख वृद्धि कारक है। चंद्रमा राशि 09 बजे से कन्या राशि में स्त्री के स्वास्थ्य में सुधार होगा। आपकी राशि का स्वामी बुध राशि से अष्टम भाव में अस्ता है। चंद्रमा आज कन्या राशि का होकर पंचम घर में अकस्मात संतान कष्ट और व्यर्थ से मानसिक क्लेश हो सकता है। आज का दिन आपके लिए काफी लाभदायक रहेगा। निवेश में आशा के अनुकूल लाभ होगा। आपकी राशि का स्वामी सूर्य शत्रु भाव में मकर राशि पर परिभ्रमण कर रहा है। चंद्रमा भी आज कन्या राशि गत है। आपकी राशि का स्वामी बुध पंचम प्रमुख त्रिकोण में श्रेष्ठ मार्गों से धन आगमन के द्वारा कोषवृद्धि का संकेत कर रहा है। आपको आज का दिन विशेष शुभकारक है। आपसे वरिष्ठ व्यक्ति भी आपकी बात सुनेंगे। सभी अवश्यकार्य कार्य आसानी से बनते चले जाएंगे। आपकी राशि पर आज चंद्रमा द्वादश का है। शनि-शुक्र पहले से ही राशि पर विपरीत फल कर रहे हैं। शनि की साढ़ेसाती के प्रभाव से बनते कामों में विघ्न उत्पन्न हो रहे हैं। एकादश घर में तुला राशि का चंद्रमा भी व्यर्थ व्यय कीर्ति की हानि का योग है। आज का दिन मिश्रित फलकारक है। राशि का स्वामी शनि की द्वादश स्थिति होने से प्रभाव प्रताप में वृद्धि होगी। आपके लिए आज का दिन अपेक्षाकृत शुभ रहेगा। राशि स्वामी शनि धनु राशि में होने से आर्थिक स्थिति से बेहतर होगी। आपकी राशि पर धनु का बृहस्पति की पंचम वृष्टि होने से आज विशेष धन लाभ व आय के साधनों में वृद्धि होगी।

अपने विचारों को सुनने का यह एक अच्छा समय : विद्युत जामवाल

एक्शन हीरो और फिटनेस को लेकर सजग रहने वाले विद्युत जामवाल को लगता है कि लॉकडाउन में समय का इस्तेमाल अपने विचारों को सुनने के लिए किया जाना चाहिए। विद्युत ने कहा, मैंने अपना समय हमेशा अपने करीबियों और प्रिय लोगों के बीच बिताया है। मैं उन्हें पर्याप्त समय देता हूँ और अब भी (उनके साथ) समय बिताकर खुश हूँ। समय का प्रबंधन करने के चलते मेरे पास समय की कमी नहीं है। उन्होंने आगे कहा, यह एक महान अवधि है, हम हमेशा लोगों से बात करते हैं और उन्हें ही सुनते हैं, लेकिन अब पूरी दुनिया लॉकडाउन में है और ऐसे में खुद के भीतर तीर्थयात्रा करने और अपने विचारों को सुनने के लिए इस समय का इस्तेमाल किया जाना चाहिए। अभिनेता वर्तमान में अपने लाइव ऑनलाइन फिटनेस सत्र के माध्यम से अपने प्रशंसकों और अनुयायियों को प्रेरित कर रहे हैं। उनका कहना है कि वह चाहते हैं कि हर कोई (इससे जुड़ी) बेसिक बातें समझे। कलारीपयट्टु में तीन साल की आयु से मार्शल आर्ट कर रहे अभिनेता ने कहा, हाथों या पैरों के माध्यम से मोमबत्तियां बुझाना या बोटल कैप चैलेंज करना या फिर हाथ से अंडे के साथ एक ईंट को तोड़ने के लिए बहुत ट्रेनिंग की आवश्यकता होती है और इसके लिए आपको बेसिक की जानकारी होने चाहिए।

रति अग्निहोत्री बेटे तनुज को वीडियो कॉल के जरिए खाना बनाना सिखा रही

अभिनेता तनुज विरवानी इस लॉकडाउन के दौरान अपनी मां रति अग्निहोत्री के हाथ के बने खाने को याद कर रहे हैं। हालांकि, इस मामले में टेक्नालॉजी उनके लिए काफी मददगार रही और वे अभिनेत्री से इसके लिए टिप्स ले पा रहे हैं। इस समय में तनुज वीडियो कॉल के जरिए अपनी मां रति से खाना पकाने के तरीके सीख रहे हैं और उनकी रेसिपी भी ट्राई कर रहे हैं। तनुज ने कहा, मांम पोलैंड में

30 दिन में दोबारा आएं अपने बाल

अगर मैं कहता हूँ कि आप केवल 1 महीने में महंगी सर्जरी और विपैले रसायनों के बिना अपने बाल विकसित कर सकते हैं, तो आप क्या कहेंगे? इतना ही नहीं, यह नहीं हो सकता। यह बिल्कुल असंभव है अगर आपको ऐसा लगता है, माफ करना, आप गलत हैं इसे पढ़ते रहें और जानें कि एक आसान प्राकृतिक तकनीक कैसे करें जो जादू बना सके ताकि सभी को सोचने के लिए मजबूर किया जा सके। पिछले तीन महीने से हमारे रीडर्स एक ऐसे फॉर्मूले के लिए पागल हो रहे हैं जो कि महिलाओं और पुरुषों के सिर के बाल बढ़ी ही तेजी और आसानी से उगा रहा है, वो भी बिना अपनी रोज की जिंदगी में कुछ बदले। ये अद्भुत करिश्माई फॉर्मूला सैंकड़ों टीवी शो में फीचर किया जा चुका है और कई टेस्ट के बाद सबसे सेफ और सबसे असरदार पाया गया है। से पढ़ें और दुनिया भर में फेमस मेडिकल प्रैक्टिशनर डॉ. गौरव गुप्ता ने हेयर लॉस इंडस्ट्री के सबसे बड़े झूठ का



पदांशु किया है। ऐसा झूठ जिसे वे बरसों से छिपा रहे थे। डॉ. गुप्ता के इस खुलासे को सारी इंडस्ट्री छुपाने में लगी हुई है। बड़ी-बड़ी फार्मा और कॉस्मेटिक कंपनियों पागलों की तरह इस एक जबरदस्त तरीके को बैन करवाने में पूरी ताकत लगा रही हैं। इससे पहले कि ये ऑर्टिकल भी हटवा दिया जाए, पढ़ते रहिये और जानिये कि कैसे आप महंगी दवाओं और दर्द भरी सर्जरी के बिना नेचुरली बाल उगा सकते हैं। डॉ. गुप्ता की चौकाने वाली खोज... मुझसे हमेशा यही कहा गया कि मेरे गिरते हुए बालों का कोई इलाज नहीं है और फिर मुझे भी ना चाहते हुए ये मानना पड़ा कि मैं अब किसी ना किसी दिन पूरी तरह गंजा हो ही जाऊंगा।

शब्द सामर्थ्य- 6

चाएँ से दाएँ

- चौड़ी और सपाट जमीन,
- श्रीगणेश, संगीत के सात स्वराओं का समूह
- धूल का कण, किसी वस्तु का सूक्ष्मकण,
- हिम्मत, सामर्थ्य
- रिसेप्शन, यथा
- अवसर पर पूछे जाने वाला मंगल कुशल
- आपस का करार,
- निबटारा
- वरदान, दुल्हा
- एक वाद्ययंत्र जिसे सपेरे बजाते हैं
- समता, बराबरी
- अश्लील, बेहूदा, अभद्र,
- शुक्ति, उपाय, ढंग
- रिक्त, अपूर्ण।
- ऊपर से नीचे
- दोस्ती, मित्रता
- अच्छी शिक्षा, नेक सलाह
- हिफाजत
- मोटापन, मधुर होने का भाव
- समुद्र
- आत्मनिर्भर, जो दूसरे पर आश्रित न हो
- रसवाला, रसदार
- मां का बच्चों के प्रति प्रेम
- खिलाट, देने की क्रिया
- दृष्टि, निगाह
- बंदिश, बुजुर्ग, चतुर
- परतपन, हार।

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 05 का हल

ला	लू	प्र	सा	द	या	द	व
प	ति			र	क्ष	क	
र	ह	मा	न				आ
वा		मि	शु	न	दा	स	
ह	वा	ला	त	सी	ता		पा
न				ब	क	वा	स
औ	र	त	म	त			
ला	वे	च	ना	व	च	न	
द	ह	ला	ना	ग	र	दी	

सू-दोक्-6

	2		6			1	
3			4		2		
						6	
6				4			
	9		5		6		
4		3			9		2
	8		2			7	
1		2		4		9	6

नियम

- कुल 81 वर्ग हैं, जिसमें 9वर्गों का एक खंड बनाता है।
- हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक रखा सकते हैं।
- चाएँ से दाएँ और ऊपर से नीचे के प्रत्येक कालम्/कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते हैं।

सू-दोक् क्र.05 का हल

8	7	6	9	5	1	2	3	4
1	3	9	2	8	4	5	6	7
4	5	2	3	7	6	9	1	8
2	8	5	4	6	7	1	9	3
3	1	7	8	9	2	4	5	6
6	9	4	1	3	5	7	8	2
9	4	1	6	2	8	3	7	5
7	2	8	5	1	3	6	4	9
5	6	3	7	4	9	8	2	1